IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जनजातियों में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं

शोधार्थी

अरुणामिश्रा

भूगोल - विभाग

अवधेशप्रताप सिंह

विश्वविद्यालय रीवा म.प्र.

शोध-निर्देशक

डॉ.आर.के.शर्मा

प्राचार्य

इंदिरा स्मृति महाविद्यालय

न्यू रामनगर सतना म. प्र.

शोध-सारांश - स्वास्थ्य जीवन का एक आवश्यक आयाम है।
इसके बिना मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इसलिए स्वस्थ पर चर्चा एक विषय है। स्वास्थ्य सभी समुदाय और क्षेत्र के जीवन का प्रमुख आधार है।और जनजाति समुदाय के लिए इसकी महत्ता कई अधिक है।
इसके दो कारण होते हैं। पृथक्करण और अंधविश्वास विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी प्रयासों के बावजूद जनजातीय स्वास्थ्य समस्याएं बनी हुई हैं।
प्रस्तुत शोध लेख द्वारा सतना जिला की जनजातीय स्वास्थ्य समस्याओं पर दृष्टि डाली गई है।

मुख्य शब्द - जनजातीय स्वास्थ्य समस्या अंधविश्वास बीमारियां

प्रस्तावना भारतीय जनजातियां प्राय एकाकी क्षेत्र में निवास करती हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद चौथे दशक में भी जनजाति क्षेत्रवासी संचार माध्यमिक की कमी के कारण अलगाव की जिंदगी जी रहे हैं इस अलगाव ने इन्हें विकास रूपी सोपान के सबसे नीचे सतह पर रोक रखा है। यह अभी भी समूह या कबीले के रूप में ही रह रही है सामाजिक आवश्यकता से ग्रस्त एकाकी जीवन बिताने वाली जनजाति की अपनी पृथक समस्याएं हैं। संपूर्ण भारतीय जनजातीय वर्तमान समय में संक्रमण के समस्या से गुजर रही है। इस संक्रमण काल में जनजातीय में अनेक समस्याएं उत्पन्न हुई है।

जनजातियों में स्वास्थ्य से संबंधित कई समस्याएं हैं

1.हानिकारक मादक वस्तुओं का सेवन- अभी तक आदिवासी लोग घर में निर्मित महुआ या चावल से बनाई गई शराब का उपयोग अपने भोजन के साथ तीज त्योहार में करते थे किंतु जब से सरकार ने मद निषेध योजनाएं बनाई गई हैं तब से विदेशी शराब आदि का प्रचलन हो गया है जिससे की इनलोगों का स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है।

2.संतुलित भोजन की समस्या- प्राय है आदिवासी लोग गरीब हैं जिसके कारण इन्हें समय से दो वक्त की रोटी नहीं मिल पाती इसके अतिरिक्त यह लोग अपने भोजन में संतुलित आहार को सम्मिलित नहीं कर पाते अपने भोजन में मदिरा को सम्मिलित करते हैं जिसके कारण यह कुपोषण के शिकार हो जाते हैं! और शरीर में तरह-तरह की बीमारियां उत्पन्न हो जातीहैं।इनमें प्राय विटामिन ए बी सी की कमी से रतौंधी बेरी बेरी स्कर्वी जैसी बीमारियां अधिक उत्पन्न होती हैं।

3.वस्त्र की समस्या - अधिकांशी आदिवासी गरीब है जिसके कारण इनके पास भोजन आवास का अभाव होने के साथ कपड़ों की भी कमी होती है जिसके कारण यह लोग एक वस्त्र को ही बिना धोए कई दिनों तक पहना रहते हैं। जिसके कारण इनका अनेक चर्म रोग लग जाते हैं इनके इनके पास पैसे ना होने के कारण भी उसे साबुन से कभी नहीं धोते एक ही कपड़ा सर्दी गर्मी बरसात में पहनने के कारण उसमें इतना मैल जम जाता है कि कीड़े पड़ जाते हैं उनके अधिकांश बच्चे वस्त्र व अभाव के कारण नंगे रहते हैं जिसके कारण उन्हें अनेक बीमारियों का सामना करना पड़ता है।

4.स्वच्छता की समस्या- जनजातीय समाज आज भी एकांत जंगल तथा शहर शहर से दूर मलिन बस्तियों में रहते हैं जहां ना प्रकाश शुद्ध वायु और पानी की व्यवस्था नहीं होती है वही यह जनजाति अपना झोपड़ी बनाकर निवास करती हैं वहां यह अनेक बीमारी से जूझते हैं जैसे है जा चेचक मलेरिया अनेक बीमारियां घर किए हुए हैं। स्वास्थ्य की स्थिति क्या होगी इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

5.बीमारी की समस्या- गंदे वास्तु व स्त्री पुरुष के अनैतिक यौन संबंधों में भी आदिवासियों को नाना प्रकार के गुप्त रोगों से पीड़ित कर रखा है। दुर्भाग्य की बात तो यह है कि यदि इन लोगों से चिकित्सा करवाने को कहो या डॉक्टरी सुविधा प्रदान करो तो बड़े आश्चर्य से देखते हैं। क्योंकि वे इन समस्त बीमारियों का निदान जादू टोने आदि से करते हैं। इससे इन लोगों में मृत्यु दर भी अधिक है।

6.चिकित्सा सुविधा की समस्या- जनजाति क्षेत्र में चिकित्सा सुविधा का अभाव आज भी है। इसके अलावा यह चिकित्सा के उपयोग से भी आज्ञान हैं। जिसके कारण उनके यहां अनेक प्रकार की घातक बीमारियां जैसे चेचक मलेरिया है जा टाइफाइड अपच आदि उत्पन्न हो जाता है इन बीमारियों के होने पर यह लोग चिकित्सा सुविधाओं के अभाव तथा अंधविश्वासों के कारण परंपरागत उपचार करते हैं जिससे रोगी की मृत्यु हो जाती है इस प्रकार चिकित्सा सुविधाओं के अभाव के कारण अनेक प्रकार की स्वास्थ संबंधी और असुविधाएं उत्पन्न होती हैं आदिवासियों का वासाव स्थान दुर्गम पहाड़ों जंगलों पत्थरों समुद्र की किनारे तथा दीपों के बीच होता है उन स्थानों में उनके घरों की बनावट सरल होती है रसोई घर नाली नहीं होते घर पर पास पड़ोस की गलियां सड़कों शौचालय के रूप में व्यवहार किया जाता है एक ही घर में खाना बनाते हैं रहते हैं तथा रहते हैं उसी में एक कोने पर गाय बकरी मुर्गी आदि रखते हैं घर में हवा तथा

रोशनी का उचित प्रबंध नहीं होता घर के बाहर गली में गोबर रख कचरा का देर रखा रहता है घर के बाहर बर्तन साफ करने के लिए गड्ढा खोदा रहता है ऐसे अस्वस्थ वातावरण में रहने के कारण जनजातियों का स्वास्थ्य बुरी तरह से प्रभावित होता है उनके बीच मलेरिया बुखार चेचक डायरिया चर्म रोग आदि फैल जाता है।

आदिवासी समाज के सदस्य ऐसे वातावरण में रहते हैं।जहां पर तालाब नदी झरना बंद नाल कुआं आदि के पानी पीने के लिए बाध्य होते हैं। कुआ तालाब नदी नाला झरना आदि के तट पर वे मुंह हाथ धोकर जलमें फेंक देते हैं। जल सूत्रों के तट पर बैगेंडा कपड़ा मिट्टी साबुन सर्फ आदि से साफ करते हैं जल सूत्रों के तट पर जानवरों को भी धोते हैं इस तट के आसपास वे लोग सुबह-शाम पैखाना भी करते हैं। बरसात के दिनों में गंदा पानी जल सूत्रों में मिल जाता है भूत प्रेत दी डायन आदि में विश्वास के कारण भी जनजातियों को स्वस्थ संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

आदिवासियों के बीच स्वस्थ एवं सफाई की समस्या

1गंदे पर्यावरण में वास स्थान

2 स्वच्छ घर का अभाव

3 गंदी नाली तथा सड़क

4 गंदा जल सूत्र

5 चिकित्सा सुविधा का अभाव

6 भूत प्रेत डायन आदि में अंधविश्वास

7 स्थानीय दावों का प्रयोग

8 गंदी नाली गली व सड़क

9 पर्यावरण में जल्दी-जल्दी बदलाव

10 परिवार नियोजन का अभाव

निष्कर्ष एवं सुझाव

स्वास्थ्य जीवन का एक आवश्यक आयाम है। इसके बिना मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इसलिए स्वस्थ पर चर्चा एक विषय है। स्वास्थ्य सभी समुदाय और क्षेत्र के जीवन का प्रमुख आधार है।और जनजाति समुदाय के लिए इसकी महत्ता कई अधिक है। इसके दो कारण होते हैं।पृथक्करण और अंधविश्वास विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी प्रयासों के बावजूद जनजातीय स्वास्थ्य समस्याएं बनी हुई हैं।जनजातीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य की परिस्थितियों के व्यापक रूप में विश्लेषित कर उनके स्थाई समाधान खोज जाएं और विभिन्न सुविधाओं की उपलब्धता के साथ उनके उपयोग और महत्व को भी बताया जाए -

1 जनजाति क्षेत्र में निर्धारित स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाई जाए साथ ही आवश्यक स्वास्थ जांच कराई जाए तभी जनजाति स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है।

2 स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन भी कराया जाए इसके माध्यम से जनजाति समुदाय में आधुनिक चिकित्सा की आवश्यकता और अंधविश्वास से मुक्ति की सीख दी जा सकती है तीसरा विद्यालय में स्वास्थ्य से जुड़े कार्यक्रमों की जागरूकता को स्थापित करने का प्रयास करना

3 दूर दराज के जनजाति क्षेत्र में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्थापित किए जाएं

4 जनजातीय लोग अपने दिन प्रतिदिन की छोटी-मोटी बीमारियां और बड़ी बीमारियों का इलाज अपने परंपरागत तरीके से करते हैं स्वदेशी जनजाति

5 चिकित्सा को अन्य चिकित्सा प्रणालियों के साथ जोड़ने के लिए एक नई कार्य नीति विकसित करने की आवश्यकता है।

6 कुपोषण की समस्या का सामना करने के लिए जनजाति परिवार को स्थानीय अनाज दालऔर खाद्य तेल पर्याप्त मात्रा में दिया जाना चाहिए जनजाति क्षेत्र में एक निश्चित अंतराल पर टीकाकरण अभियान चलाया जाना चाहिए और इसका व्यापक प्रचार प्रसार किया जाए तथा सार्वजनिक उपचार प्रणाली में चलते-फिरते स्वस्थ केदो को इसकी व्यवस्था करनी चाहिए।

7 जनजाति क्षेत्र में स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था की जानी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 डॉ. मितेश जुनेना अप्रकाशित शोध पत्र।

2जी.सी. सिंघाई चिकित्सा भूगोल वसुंधरा गोरखपुर1993 ।

3 जगजीवन पांडे बघेलखंड प्रदेश में आम प्रतिरूप का बीमारियों पर प्रभाव अप्रकाशित शोध प्रबंध अवधेश प्रताप विश्वविद्यालय रीवा।

4 जनजातिय पर्यावरण सी. पी.तिवारी।

5 मानव स्वास्थ्य पर पर्यावरणीय प्रभाव शोध पत्रिका राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी2ए3 फरवरी 1996 महाराजा कॉलेज छतरपुर ।

6 भारत भारत में ग्रामीण विकास समस्याएं एव वयहू रचना शोध पत्रिका अर्थशास्त्र विभाग सीधी 1997।

POCO
SHOT ON POCO M2

POCO
SHOT ON POCO M2

जनजातियोंमेंस्वास्थ्यसंबंधीअनेकसमस्याएं